The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 12 | December 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

स्वप्नवासवदत्तम् में विदूषक का चरित्र-चित्रण

दीपिका शर्मा
शोधार्थी, सर्वदर्शनविभाग:
कुमारभास्करवर्मासंस्कृतपुरातनाध्ययनविश्वविद्यालय:, नलवारी,असम।
Email id – sarmamomi1998@gmail.com

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
नाटक, पात्र, विदूषक , चरित्र-चित्रण, हास्य

ABSTRACT

महाकवि भास द्वारा विरचित वर्तमान में उपलब्ध त्रयोदश नाटकों से अन्तर्गत विद्वान् तथा रसज्ञों के द्वारा "स्वप्नवासवदत्तम् को सवश्रेष्ठ कृति माना जाता है। यह छह अंकीय नाटक में घटनाओं की तारतम्यता, कवित्व शक्ति, पात्रों का चरित्र चित्रण आदि उत्कृष्ट निदर्शन है। इसमें चरित्रों का क्रमशः विकास समीचीन एवं रोचक है। मै इस नाटक के " विदूषक" नामक पात्र का चरित्र चित्रण करने की प्रयास करना चाहती हुं। भास ने इस नाटक में बहुत ही प्रभावी ढंग से 'विदूषक ' नामक पात्र का चरित्र चित्रण किया है ,जो एक हास्य और नाटकीय तत्व प्रदान करता है। उसकी वाकपटुता नाटक की कथा में गति और मनोरंजन का निर्माण करती है। नाटक के घटनाक्रम में राजा उदयन,वासवदत्ता, पद्मावती और अन्य पात्र जब समस्या से गुजरते हैं तब विदूषक उनका हौंसला बढाते है और उसका सकारात्मक चितंन से हर परिस्थितियों का समाधान में सहायक होता है।

प्रस्तावना:

विदूषक नाट्य समाज के हास्य प्रिय पात्र होता है। इस पात्र की वजह से ही परिवेश हास्यमय बन जाता है। हास्य एक ऐसी भावना है जो हमें हंसाती है और हमारे मन को प्रसन्न करती है। यह एक ऐसी शक्ति है जो हमें हमारे जीवन की विभिन्न चुनौतीयों का सामना करने में मदद करती है और हमारे जीवन को अधिक सकारात्मक तथा आनन्दमय बनाती है। हास्य मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करने में मदद करता है। हास्य एक रस है जो नवरसों में अन्तर्गत। विश्वनाथ कविराज ने कहा है –

विकृताकारवाग्वेषचेष्टादे: कुहकाद्भवेत्।

हास्यो हासस्थायिभाव: श्वे: प्रमथदैवत: ।।
विकृताकारवाक्चेष्टं यमलोक्य हसेज्जन:।
तदत्रालम्वनं प्राहुस्तच्चेष्टोद्दीपनं मतम्।।
अनुभावो ऽक्षिसंकोचवदनस्मेरतादय:।
निद्रालस्यावहित्याद्या अंत्र स्युर्व्यभिचारिण:।।१।।

अर्थात् विकृत, आकार, वाणी,वेष तथा चेष्टा आदि से हास्य रस का आविर्भाव होता है। इसका स्थायी भाव हास है। वर्ण शुक्ल और अधिष्ठातृ देवता प्रमर्थ है। जिसकी विकृत, आकृति, वाणी ,वेष तथा चेष्टा आदि को देखकर लोग हंसे वह यहां आलम्बन और उसकी चेष्टा आदि उद्दीपन विभाव होते हैं। नयनों का मुकुलित होना और वदनका विकसित होना इस रस के अनुभाव होता है और निद्रा,आलस,अवहित्था आदि इसके सञ्चारी होता हैं।

संस्कृत नाटक में 'विदूषक ' नामक पात्र ने हास्य रस की उत्पत्ति करता है जिससे नाटक को रोचकता प्राप्त होती है। विदूषक शब्द का अर्थ है – विशेष रुप से व्यंग्य करनेवाला । वह अपने कार्यो, वेश-भूषा , शारीरिक अंगों से हास्य की सृष्टि करता है। उसका नाम किसी फूल अथवा वसन्तवाचक होता है।वह दुसरों को लडाने में प्रसन्न रहता है और अपने मतलब का पुरा हो अर्थात् अपने खाने पीने की बात कभी न भूलते। अर्थात् कुसुमवसन्ताद्दभिध: कर्मवपुर्वेषभाषाद्यै:। हास्यकर: कलहरतिर्विदूषक : स्यात्स्वकर्मज्ञ:।।२।।

नाटक में 'विदूषक ' नायक का सहायक होता है। वह नायक का मध्यम सहायक रूपे माना जाता है – मध्यौ विटविदूषकौ।३। विदूषक मुख्य रूप से शृंगार रस में नायक को सहायता करता है। महाकवि भास ने अपने नाटकों में हास्य रस के पात्र 'विदूषक ' को सहज सरल रूप में उपस्थापित किया है। वह स्वप्नवासवदत्तम्, प्रतिज्ञायोगन्धरायण,चारूदत्तम्,अविमारक में विदूषक नामक पात्र के माध्यम से नाटकों में हास्यपूर्ण आनंद के द्वारा लोगों को अभिभूत किया है। विदूषक नायक का सहायक तथा मित्र होता है। वह अपनी मित्रता के कारण नायक का अति आवश्यकीय सहचर बन जाता है कि जिसके कारण वह नर्म सचिव कहा जाता है। स्वप्नवासवदत्तम् में 'विदूषक ' नायक का सच्चा सहायक तथा मित्र के रूप में दृस्टिगोचर होता है और नाटक की घटनाओं के विकास मुख्य रूप में परिलक्षित होता है। वह केवल हास्य रस की सृस्टि नहीं करता वरं नायक की सफलता – असफलता ,सुख - दुःख में महत्व भूमिका निभाते हैं। इस नाटक में विदूषक को चतुर्थ ,पचंम और षष्ठ अंक में अंकित किया गया है।

विदूषक का चरित्र चित्रण:

भास विरचित स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में 'विदूषक ' का नाम है वसन्तक। नाटक में सवप्रर्थम 'विदूषक ' को चतुर्थ अंक में परिलक्षित होता है। राजा उदयन और पद्मावती के विवाह में बहुत खा लेने के कारण उसे अजीर्ण होता है।

उदर विकार के कारण उसे भोजन अभीष्ट नहीं है तभी वह दासी को कहता है – सर्वमानयतु भवती वर्जयित्वा भोजनम्।अधन्यस्य मम कोकिलानामक्षिपरिवर्त इव कुक्षिपरिवर्त: संवृत्त :।४।

'विदूषक ' की चिन्तनात्मक कल्पनाएं भी विचित्र है। उसकी वाणी सुनकर प्रत्येक श्रोतागणों को हंसी आयेगी। प्रमोदवन की दृश्य में राजा उदयन और विदूषक प्रवेश करते है। विदूषक कहते है – उताहो असनकुसुमसंचितं व्याघ्रचर्मावागुण्ठितमिव पर्वततिलक नाम शिलापट्टकं गया भवेद् अथवा अधिककटुगन्धसप्तच्छदवनं प्रविष्टा भवेद् अथवालिखितभृगपक्षिसंकुलं दारुपर्वतकं गया भवेद्।५।

अर्थात् पद्मावती कहा गइ होगी? लता मंडप पर गइ होगी अथवा बाघ के चर्म से मढे हुए की भांति असन के फुलों से आच्छादित पर्वत तिलक नामक शिलापट्ट पर गइ होगी अथवा अति कटु गन्धवाले सप्तच्छद वृक्ष के वन में गइ होगी अथवा उस काष्ठ पर्वत पर गइ होगी जहां पशु पक्षीयों के चित्र बने हैं।

पंचम अंक में पद्मावती सिर दर्द से पिडीत होती है तब राजा उदयन और विदूषक दोनों उसे देखने जाते हैं। एक पुष्पमाला तोरण से गिरि मार्ग में हवा के कारण हिल रही है। वह उसे देखकर साप समझता है। जब समुद्रगृह में विदूषक राजा उदयन को कहानी सुनाने लगता है तब वह भूल करता है – नगर ब्रह्मदत्त, राजा कापिल्य। उदयन उसके भूल को सुधारते हैं।वह अपने आप सुधार को रटता है – राजा ब्रह्मदत्त, नगर कापिल्य। इस तरह वह अपने अभिनय से दर्शक को हंसाते हैं। नाटक में 'विदूषक ' राजा उदयन को शांतना दिया दिखाई देता है। जब उदयन सो रहे थे तब विदूषक उनके लिए चद्दर लाने जाता है। उस समय में वासवदत्ता आकर उदयन के शय्या से लटके हुए हाथ को शय्या पर रखते हैं और चली जाती है। राजा उदयन विदूषक को कहता है कि वासवदत्ता जीवित है। विदूषक राजा उदयन के बातें नहीं मानते और कहते है कि आप किसी यक्षिणी को देखा होगा। नाटकों में 'विदूषक ' की दुर्दशा को देखकर दर्शकों को हंसाते हैं। इस नाटक में भास ने भी विदूषक के दुर्दशा अंकित किया गया है। प्रमोदवन में धूप से बचने के लिए जब वह राजा के साथ माधवीलता मंडप पर जाता है तब पद्मावती की दासी मंडप की लता को हिला देती है, जिससे लता पर रहते हुए भ्रमर विदूषक का पीछा करते है। वह चिल्लाने लगता है – दास्या: पुत्रैर्मधुकरै: पिडीतोऽस्मि।६। अर्थात् ये दुष्ट भ्रमर मुझे संता रहे हैं।इस तरह उसकी भीरूता भी प्रदर्शित होता है।

भास ने 'विदुषक ' को प्रतिभाशाली, प्रत्युत्पन्नमति , योग्यपरामर्शदाता तथा गंभीर रूप में उपस्थापन किया है। जैसे कि आरूणि पर आक्रमण करने वाले संबंध में वह उदयन को उचित मंत्रना देते हैं। जब उदयन वासवदत्ता की याद में रोने लगता है और पद्मावती भी वहां मौजुद होती है तब विदूषक सावधानी से पद्मावती को कहता है – भवति ! वातनीतेन काशकुसुमरेणु ना क्षिततितेन साश्रुपातं खलु तत्रभवतो मुख्य। तद् गृह्णातु भवतीदं मुखोदकम्।७।

अर्थात् कास के फूलों की पराग आंख में पड जाने से राजा का मुंह आंसुओं से भर गया है। आप मुंह धोने का यह जल लीजिए। इस तरह वह अपने सजाकता के कारण राजा उदयन को हर परिस्थितियों से बचा लेता है। विदूषक बडा ही स्वामीभक्त है। वह राजा के दुःख में दुखी और सुख में सुखी होता है। इसलिए राजा भी उस परि अधिक विश्वास करता है।

उससे अपनी सब बातें बता देते हैं। यहा कि वह अपनी दोनों पत्नियों के संबंध में भी विचारों को व्यक्त करता है , षष्ठ अंक के आरंभ में 'विदूषक ' को दिखाया गया है। जब उदयन वासवदत्ता के घोषवती वीणा को देखकर व्यर्थता होता है तब विदूषक धैर्य से बंधाता है। उदयन कहते है कि तुम वीणा को कारिगरों से ठीक करके लाओ। तब विदूषक चला जाता है । इस तरह महाकवि भास ने अपने नाटक में 'विदूषक ' का चरित्र चित्रित किया है।

निष्कर्ष:

हास्य रस प्रधान 'विदूषक' का चरित्र संस्कृत साहित्य में महत्वपूर्णा स्थान है। उसका चरित्र नाटक के सौंदर्य को प्रभावित करता है। इसके बिना नाटक अधुरा सा लगता है।'स्वप्नवासवदत्तम्' के 'विदूषक ' हास्य रस साधन तथा भोजन भट्ट नहीं है अपितु वह राजा के साथ रहकर प्रत्येक कार्य में सहायता करने वाला पात्र एवं मित्र है। वह राजा उदयन को अपने कर्तव्य में प्रेरित करते हैं। विदूषक की चिन्तनात्मक दक्षता को देखकर नाटक में आनन्द की वृद्धि होती है। भास ने विदूषक वसन्तक को शांत,सहज,सरल रूप में अवलोकन किया है।

सन्दर्भसूची :

१)श्रीविश्वनाथकविराजकृत: "साहित्यदर्पण:"- विद्यावाचस्पति साहित्याचार्य शालिग्रामशास्त्रीविरचितया विमलाख्यया हिन्दीव्याख्यया विभूषित :- मोतीलाल बनारसीदास।

२) श्रीमहाकविभासप्रणीतम् " स्वप्नवासवदत्तम्" प्रकाशक –रामनारायणलाल बेनीमाधव।

३) श्रीमहाकविभासवविरसितं " स्वप्नवासवदत्तम्" , संस्कर्ता: आचार्य जगदीशलाल शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास।

४) SVAPNAVASAVADATTA of BHASA by LATE M.R. KALE, BHARATIYA VIDYA PRAKASHAN.